## प्लेटो के साम्यवाद के प्रकार (plato ka samyave prakar)

प्लेटो का साम्यवाद दो प्रकार का है-

1. सम्पत्ति का साम्यवाद

2. पत्नियों का साम्यवाद

प्लेटो का सम्पत्ति संबंधी साम्यवाद

व्यक्तिगत सम्पत्ति का उन्मूलन प्लेटो की साम्यवादी विचारधारा का एक अंग है। प्लेटो की धारणा है कि व्यक्तिगत सम्पत्ति व्यक्ति को स्वार्थी लालची, ईर्ष्यालु प्रतिद्वन्द्वी और हीन बनाती है और राज्य की एकता और न्याय को संकट में डाल देती है।

अत : प्लेटो अपने आदर्श राज्य के दार्शनिक शासकों और सैनिकों को व्यक्तिगत सम्पत्ति से वंचित रखता है । वह धन या सम्पत्ति को अनैतिक बतलाते हुए कहता है कि एक ही व्यक्ति के हाथ में सम्पत्ति और शासन की शक्ति रहने से वह पथभ्रष्ट होकर भीषण परिस्थितियों उत्पन्न कर सकता है।

अत: सम्पत्ति को शासन से अलग रखना ही श्रेयस्कर है शासक तथा सैनिक वर्ग निजी सम्पत्ति के अधिकारी नहीं बन सकते।

प्लेटो संरक्षक वर्ग के लिए सम्पत्ति विषयक साम्यवाद का प्रतिपादन करते हुए कहता है कि, " पहली बात यह है कि उनके पास तो केवल उतनी ही सम्पत्ति होगी जितनी जीवन के लिए नितान्त अनिवार्य है। न तो उनके पास अपना कोई घर होगा और न कोई ऐसा गोदाम जो सबके लिए खुला न हो। उन्हें सामान्य भोजनालयों में भोजन करना चाहिए। सिपाहियों की तरह डेरों में रहना चाहिए और केवल ये ही ऐसे नागरिक हैं जिन्हें सोना-चांदी छूना तक नहीं चाहिए। इसी में उनकी मुक्ति है और ऐसा करने से वे राज्य के रक्षक बन सकेंगे।"

प्लेटो की साम्यवादी व्यवस्था में संरक्षक वर्ग के पास किसी प्रकार की कोई सम्पत्ति नहीं होगी। उनकी सेवाओं के पुरस्कारस्वरूप उत्पादक वर्ग उन्हें प्रति वर्ष वस्तुओं के रूप में निश्चित वेतन देगा। इन वस्तुओं का उपयोग एवं स्वामित्व भी व्यक्तिगत आधार पर नहीं होगी, सामूहिक रूप से ही वे इनका उपयोग कर सकेंगे।

राज्य के तीसरे वर्ग- उत्पादक वर्ग (Producing Class) को ही प्लेटो ने व्यक्तिगत सम्पत्ति रखने का अधिकार दिया है। राज्य के अंग के रूप में इस वर्ग का गुण क्षुधा (Appetite) है, अत: सम्पत्ति पैदा करने एवं संचय करने का अधिकार केवल इसी को दिया जा सकता है, किन्तु प्लेटो इस वर्ग को यह अधिकार स्वच्छन्द रूप से प्रदान नहीं करता। यह वर्ग सम्पत्ति का उत्पादन राज्य के कठोर नियन्त्रण में ही करेगा।

सरकार व्यापार व्यवसाय तथा उद्योग-धन्धों पर कठोर नियन्त्रण रखेगी। राज्य इस बात को भी ध्यान में रखेगा कि उत्पादक वर्ग में कोई बहुत अधिक धनी तथा कोई बहुत अधिक निर्धन न हो जाय। कतिपय हाथों में धन का बाहुल्य होना तथा बहुसंख्यक लोगों का आर्थिक अभाव से पीड़ित होना- ये दोनों ही स्थितियां प्लेटो के अनुसार आदर्श राज्य के लिए अवांछनीय है। यह आर्थिक क्षेत्र में व्यक्तिगत आधार पर उत्पादन एवं राज्य नियन्त्रण (State Control) का समर्थक है।

प्लेटो के अनुसार राज्य को न केवल सम्पत्ति के अत्यधिक बाहुल्य एवं अत्यधिक न्यूनता को ही नियन्त्रित करना है, बल्कि यह भी देखना कि सम्पत्ति उचित साधनों से अर्जित की गई है अथवा नहीं ऊंचे ब्याज पर अथवा अधिक मुनाफा रखकर किया गया सम्पत्ति का संचय उसने अनुचित माना है। कृषि विषय में प्लेटो का यह विचार था कि उत्पादन व्यक्तिगत आधार पर किया जाये और भूमि पर व्यक्तिगत स्वामित्व हो भूमि प्रकृति की देन है, अत: सभी कृषकों में इसका समान रूप से वितरण किया जाना चाहिए सभी प्रकार की सम्पत्ति के उपयोग के बारे में प्लेटो ने यह विचार व्यक्त किया है कि यह उपयोग किसी भी तरह से समाज के लिए अनिष्टकारी सिद्ध नहीं होना चाहिए। समाज के सभी वर्गों के उचित हितों को ध्यान में रखकर सम्पत्ति के उपयोग की व्यवस्था की जानी चाहिए क्योंकि अन्ततोगत्वा सम्पत्ति समाज के द्वारा ही पैदा की जाती है।